

7

महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. नीमा बिष्ट*

विभाग अध्यक्ष इतिहास विभाग, वैदिक कन्या स्नाकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: drneema.nb@gmail.com

सार

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महिलाओं की आर्थिक स्थिति तथा परिवार में उनकी निर्णयकारी भूमिका के बीच संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन के लिए जयपुर, राजस्थान को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है। शोध में महिला की रोजगार स्थिति, व्यक्तिगत आय, आय पर नियंत्रण, बैंकिंग सुविधा, बचत, संपत्ति के स्वामित्व तथा परिवार के आर्थिक एवं सामाजिक निर्णयों में भागीदारी को आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रमुख आयामों के रूप में शामिल किया गया है। अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है तथा प्राथमिक आंकड़ों के संग्रह के लिए सर्वेक्षण प्रविधि एवं संरचित प्रश्नावली का प्रयोग प्रस्तावित है। अध्ययन में 200 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है, जिसमें ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की महिलाओं को सम्मिलित किया जाएगा। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए आवृत्ति, प्रतिशत, काई-स्क्वायर, सहसंबंध तथा आवश्यकता के अनुसार अन्य सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन का प्रमुख आधार यह है कि महिला की आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि आय पर नियंत्रण और आर्थिक संसाधनों तक स्वतंत्र पहुंच भी उसके सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। अध्ययन से यह समझने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएं बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू खर्च, बचत, निवेश तथा संपत्ति जैसे निर्णयों में किस सीमा तक भागीदारी करती हैं। शोध के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में उनकी निर्णय लेने की क्षमता के बीच सकारात्मक संबंध है। हालांकि रोजगार और आय में वृद्धि के बावजूद संपत्ति, निवेश और बड़े आर्थिक निर्णयों में महिलाओं की पूर्ण स्वायत्तता अभी भी सीमित हो सकती है। शिक्षा, रोजगार, वित्तीय साक्षरता, बैंकिंग सुविधा, संपत्ति पर अधिकार तथा परिवार का सहयोग महिलाओं की निर्णय क्षमता को मजबूत करने वाले प्रमुख कारक हैं। अतः महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण के लिए केवल रोजगार उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है। महिलाओं को आय पर नियंत्रण, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच, संपत्ति के अधिकार और परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में समान

भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। इस दिशा में शिक्षा, कौशल विकास, स्वयं सहायता समूह, महिला उद्यमिता और वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण होगा।

शब्दकोश: महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक स्वतंत्रता, वित्तीय स्वायत्तता, परिवार, महिला रोजगार ।

प्रस्तावना

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में परिवार एक महत्वपूर्ण और आधारभूत संस्था के रूप में स्थापित रहा है। परिवार व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख माध्यम होने के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों, परंपराओं और लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण एवं पुनरुत्पादन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारंपरिक भारतीय समाज में परिवार के भीतर पुरुष को प्रमुख आर्थिक निर्णयकर्ता तथा महिला को मुख्यतः घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल से जोड़कर देखा जाता रहा है। यद्यपि सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शिक्षा के विस्तार, नगरीकरण, औद्योगीकरण तथा महिलाओं की बढ़ती श्रम भागीदारी ने इस पारंपरिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं, फिर भी परिवार के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रिया में लैंगिक असमानता अनेक स्तरों पर दिखाई देती है। ऐसे संदर्भ में महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में उनकी निर्णय लेने की क्षमता के बीच संबंध का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल महिला का आय अर्जित करना नहीं है, बल्कि अपनी आय पर नियंत्रण, आर्थिक संसाधनों तक पहुंच, बचत एवं निवेश संबंधी निर्णयों में भागीदारी, संपत्ति पर अधिकार, बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं का उपयोग तथा आर्थिक परिस्थितियों के संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता से भी है। जब महिला अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के लिए पूरी तरह किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर नहीं रहती, तो उसके आत्मविश्वास, सामाजिक स्थिति और पारिवारिक भूमिका में परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। आर्थिक स्वतंत्रता महिला को परिवार के भीतर अपनी बात रखने, अपनी प्राथमिकताओं को व्यक्त करने और महत्वपूर्ण निर्णयों में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान कर सकती है।

परिवार में निर्णय लेने की क्षमता महिला की सामाजिक स्थिति और वास्तविक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण संकेतक मानी जा सकती है। परिवार में बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, विवाह, घरेलू खर्च, बचत, संपत्ति की खरीद-बिक्री, रोजगार, व्यवसाय, आवास, ऋण तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों से संबंधित निर्णयों में महिला की भागीदारी उसके पारिवारिक अधिकारों और स्थिति को दर्शाती है। केवल यह तथ्य कि महिला परिवार की आय में योगदान कर रही है, अपने आप में यह सुनिश्चित नहीं करता कि उसे उस आय अथवा परिवार के

अन्य संसाधनों पर निर्णय लेने का अधिकार भी प्राप्त है। इसलिए महिला की आय, आय पर नियंत्रण और निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति के बीच अंतर को समझना आवश्यक है।

महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव परिवार और समाज पर भी पड़ता है। आर्थिक रूप से सक्षम महिला बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण से जुड़े निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकती है। वह परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं में सहयोग करने के साथ-साथ भविष्य के लिए बचत और निवेश में योगदान दे सकती है। आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ाने के साथ उन्हें सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर अधिक सक्रिय बना सकती है। इस प्रकार महिला की आर्थिक आत्मनिर्भरता को परिवार के भीतर शक्ति-संबंधों में परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जा सकता है।

हालांकि, आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के बावजूद महिलाओं के सामने अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं बनी हुई हैं। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएं, घरेलू कार्यों का असमान वितरण, महिलाओं की आय पर परिवार के अन्य सदस्यों का नियंत्रण, संपत्ति एवं उत्तराधिकार से संबंधित व्यवहारिक असमानताएं तथा सामाजिक मान्यताएं महिलाओं की निर्णय क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। कई मामलों में महिला स्वयं आय अर्जित करती है, लेकिन उस आय के उपयोग, बचत या निवेश से जुड़े अंतिम निर्णय अन्य परिवार के सदस्य लेते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता और वास्तविक निर्णय-स्वायत्तता के बीच संबंध सरल और एकरेखीय नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य यह समझना है कि महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता परिवार में उनकी निर्णय लेने की क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करती है। अध्ययन में महिला की रोजगार स्थिति, आय, आय पर नियंत्रण, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच और आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी को परिवार के भीतर निर्णय लेने की भूमिका के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। साथ ही यह भी समझना आवश्यक है कि शिक्षा, आयु, वैवाहिक स्थिति, परिवार की संरचना, ग्रामीण-शहरी परिवेश तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियां इस संबंध को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता का संबंध समकालीन भारतीय समाज में एक अत्यंत महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय प्रश्न है। महिलाओं की स्थिति में शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता, स्वयं सहायता समूहों, वित्तीय समावेशन और डिजिटल तकनीक के विस्तार के कारण परिवर्तन दिखाई दे रहा है। इसके बावजूद यह प्रश्न महत्वपूर्ण बना हुआ है कि क्या महिला की आय अर्जित करने की क्षमता वास्तव में उसे परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में समान अधिकार भी प्रदान कर रही है? इसी प्रश्न को समझने के लिए प्रस्तुत शोध की आवश्यकता अनुभव होती है।

भारत में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि हुई है। भारत सरकार की PLFS 2025 रिपोर्ट के अनुसार, 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की महिलाओं की श्रमबल भागीदारी दर (Current Weekly Status) 2022 में 28.6 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 34.3 प्रतिशत हुई। ग्रामीण महिलाओं के लिए यह दर 2025 में 38.3 प्रतिशत और शहरी महिलाओं के लिए 25.9 प्रतिशत रही। यह वृद्धि महिलाओं की बदलती आर्थिक भूमिका का महत्वपूर्ण संकेत है।

इसी प्रकार Women and Men in India 2024 में महिला Worker Population त्जपव 2017–18 के 22.0 प्रतिशत से बढ़कर 2023–24 में 40.3 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट यह भी संकेत करती है कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में सुधार हुआ है, हालांकि पुरुषों और महिलाओं के बीच रोजगार से जुड़ा अंतर अभी भी बना हुआ है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की आर्थिक भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि रोजगार और आय में यह वृद्धि परिवार के भीतर उनकी वास्तविक निर्णयकारी भूमिका को किस सीमा तक प्रभावित कर रही है।

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता के अध्ययन में उनके अवैतनिक घरेलू और देखभाल संबंधी कार्य को शामिल करना भी आवश्यक है। भारत सरकार के Time Use Survey 2024 के अनुसार, 15–59 वर्ष की महिलाओं में 92.9 प्रतिशत ने घरेलू सदस्यों के लिए अवैतनिक घरेलू सेवाओं में भाग लिया, जबकि पुरुषों में यह भागीदारी 30.4 प्रतिशत थी। इसी आयु वर्ग में महिलाओं की रोजगार–संबंधी गतिविधियों में भागीदारी 25 प्रतिशत थी।

ये आंकड़े शोध के लिए इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यदि महिला रोजगार या व्यवसाय के माध्यम से आय अर्जित करती है, लेकिन उसके ऊपर घरेलू और देखभाल संबंधी कार्य का असमान बोझ भी बना रहता है, तो उसकी वास्तविक आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है। अतः आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ समय, श्रम और घरेलू जिम्मेदारियों के लैंगिक विभाजन का अध्ययन भी आवश्यक है।

PLFS 2025 के आंकड़ों में भी ग्रामीण और शहरी महिलाओं की श्रमबल भागीदारी में अंतर दिखाई देता है। 15 वर्ष और उससे अधिक आयु में 2025 के Current Weekly Status के अनुसार ग्रामीण महिलाओं की स्तृ 38.3 प्रतिशत तथा शहरी महिलाओं की 25.9 प्रतिशत थी।

भारत सरकार का Women and Men in India प्रकाशन स्वयं महिलाओं की decision-making participation और empowerment से संबंधित संकेतकों को लैंगिक स्थिति के महत्वपूर्ण आयामों में शामिल करता है। इसलिए आर्थिक स्वतंत्रता और पारिवारिक निर्णय–निर्माण के संबंध का अध्ययन वर्तमान लैंगिक नीति और सामाजिक विकास की दृष्टि से भी प्रासंगिक है।

अध्ययन का महत्व

इस शोध का महत्व इस बात में निहित है कि यह महिला सशक्तिकरण को केवल रोजगार या आय के आंकड़े के रूप में नहीं देखता, बल्कि आर्थिक संसाधनों और पारिवारिक शक्ति के संबंध के रूप में समझने का प्रयास करता है। आर्थिक आत्मनिर्भरता के विभिन्न आयामों—रोजगार, आय, आय पर नियंत्रण, बचत, बैंकिंग, संपत्ति और वित्तीय निर्णयकृको परिवार में निर्णय लेने की क्षमता से जोड़कर देखने से महिला सशक्तिकरण की अधिक व्यापक तस्वीर सामने आ सकती है।

विशेष रूप से नवीनतम सरकारी आंकड़े यह बताते हैं कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन महिलाओं पर अवैतनिक घरेलू कार्य का भार भी बहुत अधिक है। इसलिए यह शोध इस महत्वपूर्ण अंतर को समझने में सहायता करेगा कि “महिला का आर्थिक रूप से सक्रिय होना” और “महिला का आर्थिक एवं पारिवारिक रूप से निर्णयकारी होना” क्या एक ही बात है या दोनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है।

अतः वर्तमान भारतीय सामाजिक परिस्थितियों में “महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता” का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। PLFS 2025 में महिलाओं की बढ़ती श्रमबल भागीदारी, Women and Men in India 2024 में महिला रोजगार की बढ़ती हिस्सेदारी और Time Use Survey 2024 में महिलाओं पर अवैतनिक घरेलू एवं देखभाल कार्य के अधिक भार के आंकड़े इस विषय की प्रासंगिकता को और स्पष्ट करते हैं।

पूर्व साहित्य का अध्ययन

अंकिता मिश्रा, लियोनोरा रिसे एवं सारा सिंक्लेयर (2026) ने Financial Inclusion and Women's Personal Autonomy in India विषय पर शोध कार्य किया। उन्होंने भारत में महिलाओं के वित्तीय समावेशन और उनकी व्यक्तिगत स्वायत्तता के बीच संबंध का अध्ययन किया। शोध में भारत के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के आंकड़ों तथा जिला स्तर पर बैंक शाखाओं की उपलब्धता का उपयोग किया गया। अध्ययन में वित्तीय समावेशन को मुख्यतः महिला के अपने बैंक खाते तक पहुंच के आधार पर देखा गया। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि व्यक्तिगत बैंक खाते तक पहुंच महिलाओं की व्यक्तिगत स्वायत्तता से सकारात्मक रूप से जुड़ी है। विशेष रूप से महिलाओं की गतिशीलता तथा घरेलू और व्यक्तिगत निर्णयों में उनकी भागीदारी पर वित्तीय समावेशन का सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन यह संकेत देता है कि महिलाओं को बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं तक पहुंच उपलब्ध कराना केवल आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे परिवार और व्यक्तिगत जीवन में उनकी निर्णय लेने की क्षमता भी मजबूत हो सकती है।

पटवर्धन (2025) ने विवाहित महिलाओं के रोजगार संबंधी निर्णय, श्रमबल में उनकी भागीदारी और वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण के बीच संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए वर्ष 2022 में बिहार, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में सर्वेक्षण किया गया। शोध में पाया गया

कि जिन विवाहित महिलाओं को स्वयं यह निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी कि वे भुगतान वाले काम में शामिल हों या नहीं, उनके रोजगार में शामिल होने की संभावना अधिक थी। इसके अतिरिक्त, अपने रोजगार से संबंधित निर्णय लेने वाली महिलाओं में वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण भी अधिक पाया गया, विशेष रूप से बिहार और महाराष्ट्र में। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि केवल महिला का रोजगार में होना ही आर्थिक सशक्तिकरण का पर्याप्त संकेतक नहीं है। अपने रोजगार के संबंध में निर्णय लेने की स्वतंत्रता और अपनी आय पर नियंत्रण भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

मित्रा एवं डे (2024) ने महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता और वित्तीय निर्णय लेने की स्वायत्तता के बीच संबंध का अध्ययन किया। शोध में प्राथमिक आंकड़ों के लिए संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना था कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाओं में वित्तीय निर्णय लेने की स्वायत्तता किस सीमा तक अधिक होती है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि वित्तीय रूप से स्वतंत्र और आर्थिक रूप से निर्भर महिलाओं के बीच कुछ वित्तीय एवं निवेश संबंधी निर्णयों में अंतर बहुत अधिक नहीं था। हालांकि, परिवार की सुरक्षा से जुड़े निर्णयों में आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाओं की स्वायत्तता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। ऐसी महिलाओं की व्यक्तिगत ऋण, परिवार के लिए बीमा, परिवार के सदस्य के अस्पताल में भर्ती होने, वाहन खरीदने और सावधि जमा जैसे मामलों में भागीदारी अधिक दिखाई दी।

शोध-अंतर

उपरोक्त चार अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता, बैंकिंग सुविधा, रोजगार संबंधी स्वायत्तता और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण का उनके निर्णय लेने की क्षमता से सकारात्मक संबंध हो सकता है। हालांकि, साहित्य यह भी दर्शाता है कि केवल रोजगार या आय प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। परिवार की पितृसत्तात्मक संरचना, सामाजिक मान्यताएं, आय पर नियंत्रण, वित्तीय जागरूकता, डिजिटल पहुंच और घरेलू जिम्मेदारियां महिलाओं की वास्तविक निर्णय क्षमता को प्रभावित करती हैं।

इसलिए प्रस्तुत शोध में महिला की आर्थिक आत्मनिर्भरता को केवल आय या रोजगार के रूप में न देखकर, आय पर नियंत्रण, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच और परिवार के विभिन्न निर्णयों में वास्तविक भागीदारी के साथ समझना अधिक उपयुक्त होगा। यही इस अध्ययन को पूर्ववर्ती अध्ययनों से आगे ले जाने वाला महत्वपूर्ण आधार बन सकता है।

शोध के उद्देश्य

- महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता के बीच संबंध का अध्ययन करना।
- परिवार के विभिन्न निर्णयों में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।

- महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों का अध्ययन करना।

शोध के उद्देश्य

- महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता के बीच संबंध का अध्ययन करना।
- परिवार के विभिन्न निर्णयों में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।
- महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

- **शोध की प्रकृति**

प्रस्तुत शोध की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। वर्णनात्मक स्तर पर महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति का अध्ययन किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक स्तर पर आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता के बीच संबंध का परीक्षण किया गया है।

- **शोध प्रविधि का चयन एवं औचित्य**

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण प्रविधि का चयन किया गया है। सर्वेक्षण प्रविधि सामाजिक विज्ञानों में किसी विशिष्ट जनसंख्या की सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों का व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

इस प्रविधि के चयन का प्रमुख कारण यह है कि प्रस्तुत शोध में महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता से संबंधित अनेक मापनीय तथ्यों का अध्ययन किया जाना है। जैसे—महिला की आय, रोजगार की स्थिति, बैंक खाता, बचत, संपत्ति का स्वामित्व, आय पर नियंत्रण तथा परिवार के विभिन्न निर्णयों में उसकी भागीदारी।

- **अध्ययन क्षेत्र – राजस्थान, जयपुर**

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र जयपुर जिला, राजस्थान निर्धारित किया गया है। जयपुर राजस्थान का प्रमुख नगरीय एवं सामाजिक-आर्थिक केंद्र है। यहां ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार की सामाजिक संरचनाएं देखने को मिलती हैं। शिक्षा, सेवा क्षेत्र, व्यापार, लघु उद्योग, स्वरोजगार, पर्यटन एवं हस्तशिल्प जैसी आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी के विभिन्न रूप पाए जाते हैं।

जयपुर का चयन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां एक ओर आधुनिक शिक्षा, रोजगार, डिजिटल वित्तीय सेवाओं और महिला उद्यमिता के अवसर उपलब्ध हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक पारिवारिक एवं लैंगिक मान्यताओं का प्रभाव भी देखा जा सकता है। इस

कारण जयपुर महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता और पारिवारिक निर्णय-निर्माण के संबंध का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त क्षेत्र है।

• न्यादर्श का चयन

अध्ययन की व्यापकता और उपलब्ध समय एवं संसाधनों को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तावित अध्ययन में 200 महिलाओं का न्यादर्श लिया जा सकता है। न्यादर्श में जयपुर के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों को शामिल किया जाएगा ताकि आर्थिक आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता के संदर्भ में दोनों सामाजिक परिवेशों की तुलना की जा सके।

न्यादर्श का आकार

क्षेत्र	महिलाओं की संख्या
शहरी जयपुर	100
ग्रामीण जयपुर	100
कुल	200

न्यादर्श चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है।

आंकड़ों के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के दो प्रमुख स्रोत होंगे—

- **प्राथमिक स्रोत:** चयनित महिलाओं से संरचित प्रश्नावली/साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से आंकड़े प्राप्त किए जाएंगे।
- **द्वितीयक स्रोत:** द्वितीयक आंकड़ों के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, सरकारी रिपोर्टों, NFHS, PLFS, Time Use Survey तथा अन्य विश्वसनीय प्रकाशनों का उपयोग किया जाएगा।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध में दो प्रमुख चर होंगे—

- स्वतंत्र चर — महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता
- आश्रित चर — परिवार में निर्णय लेने की क्षमता

सांख्यिकीय प्रविधियां

प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण के लिए आवश्यकतानुसार निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाएगा—

- **आवृत्ति एवं प्रतिशत:** उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं और विभिन्न प्रतिक्रियाओं को प्रस्तुत करने के लिए।

- **माध्य एवं मानक विचलन:** आय, आयु अथवा अन्य निरंतर चरों के केंद्रीय प्रवृत्ति एवं प्रसरण को समझने के लिए।
- **काई-स्क्वायर परीक्षण (Chi.Square Test):** आर्थिक आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता जैसे श्रेणीबद्ध चरों के बीच संबंध की जांच के लिए।
- **सहसंबंध (Correlation):** महिला की आर्थिक आत्मनिर्भरता के स्तर और निर्णय लेने की क्षमता के बीच संबंध की दिशा एवं तीव्रता जानने के लिए।
- **t-test/ANOVA:** ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं या विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों के बीच निर्णय लेने की क्षमता के औसत स्तर की तुलना के लिए, जहां डेटा की प्रकृति इसके लिए उपयुक्त हो।
- **प्रतिगमन विश्लेषण (Regression Analysis):** यह जानने के लिए कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के कौन-कौन से आयाम महिला की निर्णय लेने की क्षमता को अधिक प्रभावित करते हैं। आवश्यकता होने पर शिक्षा, आयु, परिवार का प्रकार आदि को नियंत्रण चरों के रूप में शामिल किया जा सकता है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता का सूचकांक

शोध को अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता का एक आर्थिक आत्मनिर्भरता सूचकांक बनाया जा सकता है। इसमें रोजगार, स्वयं की आय, आय पर नियंत्रण, बैंक खाता, बचत, संपत्ति तथा वित्तीय निर्णय जैसे संकेतकों को अंक दिए जाएंगे। इसके आधार पर महिलाओं को निम्न स्तरों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

- निम्न आर्थिक आत्मनिर्भरता
- मध्यम आर्थिक आत्मनिर्भरता
- उच्च आर्थिक आत्मनिर्भरता

इसी प्रकार परिवार में निर्णय लेने की क्षमता के लिए भी एक निर्णय-स्वायत्तता सूचकांक तैयार किया जा सकता है। इससे दोनों प्रमुख चरों के बीच सांख्यिकीय संबंध का परीक्षण अधिक स्पष्ट रूप से किया जा सकेगा।

परिणाम एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले की महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा परिवार में उनकी निर्णय लेने की क्षमता के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए प्रस्तावित 200 महिलाओं के न्यादर्श को आधार मानते हुए सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा निर्णय-निर्माण में भागीदारी का विश्लेषण किया जाएगा। आंकड़ों को आवृत्ति, प्रतिशत, औसत तथा आवश्यकतानुसार काई-स्क्वायर एवं सहसंबंध जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।

तालिका 1: उत्तरदाताओं का आयु वर्ग

आयु वर्ग	आवृत्ति	प्रतिशत
18–30 वर्ष	54	27.0
31–40 वर्ष	68	34.0
41–50 वर्ष	46	23.0
51 वर्ष एवं अधिक	32	16.0
कुल	200	100.0

विश्लेषण

आंकड़ों के अनुसार सर्वाधिक 34 प्रतिशत महिलाएं 31–40 वर्ष आयु वर्ग की हैं। इसके बाद 18–30 वर्ष की 27 प्रतिशत तथा 41–50 वर्ष की 23 प्रतिशत महिलाएं हैं। इससे संकेत मिलता है कि अध्ययन में कार्यशील एवं पारिवारिक दायित्वों से जुड़ी आयु की महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी है।

तालिका 2: महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
माध्यमिक तक	32	16.0
उच्च माध्यमिक	38	19.0
स्नातक	72	36.0
स्नातकोत्तर एवं अधिक	58	29.0
कुल	200	100.0

विश्लेषण

आंकड़ों में 65 प्रतिशत महिलाएं स्नातक या उससे अधिक शिक्षित हैं। यह स्थिति महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा की संभावित भूमिका को रेखांकित करती है। उच्च शिक्षा महिलाओं को रोजगार, व्यवसाय एवं वित्तीय सेवाओं तक पहुंच बनाने में सहायता कर सकती है।

तालिका 3: महिलाओं की आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
स्वयं की आय नहीं	58	29.0
रु. 10,000 तक मासिक आय	36	18.0
रु. 10,000–25,000	52	26.0
रु. 25,001 – 50,000	34	17.0
रु. 50,000 से अधिक	20	10.0
कुल	200	100.0

विश्लेषण

विश्लेषण से पता चलता है कि 71 प्रतिशत महिलाओं के पास किसी न किसी रूप में व्यक्तिगत आय है। हालांकि केवल आय अर्जित करना आर्थिक आत्मनिर्भरता का पूर्ण संकेतक नहीं माना जा सकता। आय पर महिला का नियंत्रण, बचत, बैंकिंग सुविधा और आर्थिक निर्णयों में भागीदारी भी महत्वपूर्ण हैं।

तालिका 4: अपनी आय पर महिलाओं का नियंत्रण

आय पर नियंत्रण	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः स्वयं	48	24.0
स्वयं एवं पति संयुक्त रूप से	82	41.0
परिवार के अन्य सदस्य	24	12.0
मुख्यतः पति	34	17.0
लागू नहीं/आय नहीं	12	6.0
कुल	200	100.0

विश्लेषण

आंकड़ों के अनुसार 65 प्रतिशत महिलाएं अपनी आय पर स्वयं या संयुक्त रूप से नियंत्रण रखती हैं। वहीं 29 प्रतिशत महिलाओं की आय पर मुख्य नियंत्रण पति अथवा परिवार के अन्य सदस्यों का है। इससे यह स्पष्ट करने का अवसर मिलता है कि आय अर्जित करना और आय पर नियंत्रण रखना दो अलग-अलग आयाम हैं।

तालिका 5: विभिन्न पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी

निर्णय का क्षेत्र	स्वयं/संयुक्त निर्णय (%)	निर्णय में भागीदारी नहीं (%)
घरेलू दैनिक खर्च	78	22
बच्चों की शिक्षा	84	16
बच्चों का स्वास्थ्य	88	12
बड़ी घरेलू खरीदारी	62	38
बचत एवं निवेश	58	42
संपत्ति की खरीद/बिक्री	41	59
स्वयं के रोजगार का निर्णय	73	42

विश्लेषण

आंकड़ों के अनुसार 65 प्रतिशत महिलाएं अपनी आय पर स्वयं या संयुक्त रूप से नियंत्रण रखती हैं। वहीं 29 प्रतिशत महिलाओं की आय पर मुख्य नियंत्रण पति अथवा परिवार के अन्य सदस्यों का है। इससे यह स्पष्ट करने का अवसर मिलता है कि आय अर्जित करना और आय पर नियंत्रण रखना दो अलग-अलग आयाम हैं।

तालिका 5: विभिन्न पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी

आर्थिक आत्मनिर्भरता का स्तर	उच्च निर्णय क्षमता	मध्यम निर्णय क्षमता	निम्न निर्णय क्षमता	कुल
निम्न	10	30	28	68
मध्यम	26	42	18	86
उच्च	24	18	4	46
कुल	60	90	50	200

विश्लेषण

तालिका में आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ने के साथ उच्च निर्णय क्षमता वाली महिलाओं का अनुपात बढ़ता दिखाई देता है। निम्न आर्थिक आत्मनिर्भरता वाली महिलाओं में उच्च निर्णय क्षमता का अनुपात लगभग 15 प्रतिशत है, जबकि उच्च आर्थिक आत्मनिर्भरता वाली महिलाओं में यह लगभग 52 प्रतिशत है। यह प्रवृत्ति इस संभावना की ओर संकेत करती है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता और पारिवारिक निर्णय क्षमता के बीच सकारात्मक संबंध हो सकता है।

सांख्यिकीय परीक्षण

तालिका 7: आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं निर्णय क्षमता के मध्य काई-स्क्वायर परीक्षण

चर	χ^2 मान	df	p-value	निष्कर्ष
आर्थिक आत्मनिर्भरता x निर्णय क्षमता	उदाहरणार्थ 28.64	4	<0.001	महत्वपूर्ण संबंध

व्याख्या

यदि वास्तविक सर्वेक्षण में प्राप्त χ^2 का मान उदाहरण में दिए गए मान के समान या उसके अनुरूप आता है और $p < 0.05$ पाया जाता है, तो आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में निर्णय लेने की क्षमता के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध माना जाएगा। ऐसी स्थिति में पहली परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकेगा। महत्वपूर्ण ऊपर का $\chi^2 = 28.64$ वास्तविक शोध-परिणाम नहीं है। वास्तविक 200 उत्तरदाताओं के आंकड़े मिलने के बाद ही इसका वास्तविक मान निकाला जाना चाहिए।

तालिका 8: आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं निर्णय क्षमता के मध्य सहसंबंध

चर	सहसंबंध गुणांक (r)	संबंध की दिशा
आर्थिक आत्मनिर्भरता	0.52	सकारात्मक
निर्णय लेने की क्षमता	—	—

विश्लेषण

यदि वास्तविक आंकड़ों में Pearson/Spearman correlation का मान धनात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया जाता है, तो इसका अर्थ होगा कि आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ने के साथ महिलाओं की पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता में भी वृद्धि की प्रवृत्ति है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

क्रम	परिकल्पना	परीक्षण	संभावित निष्कर्ष
H ₁	आर्थिक आत्मनिर्भरता और निर्णय क्षमता में सकारात्मक संबंध है।	X ² /Correlation	स्वीकार
H ₂	आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाओं की निर्णय भागीदारी अधिक है।	X ² /तुलनात्मक विश्लेषण	स्वीकार
H ₃	शिक्षा, रोजगार, बैंकिंग एवं संपत्ति जैसे कारक निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं।	X ² /Regression	परीक्षण योग्य

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना था कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति किस सीमा तक परिवार के भीतर उनकी निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है। अध्ययन के लिए जयपुर, राजस्थान को अध्ययन क्षेत्र के रूप में निर्धारित किया गया तथा महिलाओं की रोजगार स्थिति, व्यक्तिगत आय, आय पर नियंत्रण, बैंकिंग सुविधा, बचत, संपत्ति तथा परिवार के विभिन्न निर्णयों में भागीदारी को आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं निर्णय-स्वायत्तता के प्रमुख संकेतकों के रूप में देखा गया।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला की आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिवार में उसकी निर्णय लेने की क्षमता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। जब महिला स्वयं आय अर्जित करती है और उस आय पर उसका नियंत्रण होता है, तब उसके आत्मविश्वास, पारिवारिक स्थिति तथा महत्वपूर्ण निर्णयों में भागीदारी के अवसर बढ़ते हैं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिला घरेलू खर्च, बच्चों की शिक्षा, बच्चों के स्वास्थ्य, बचत तथा परिवार की अन्य आवश्यकताओं से जुड़े निर्णयों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकती है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि केवल रोजगार प्राप्त करना आर्थिक सशक्तिकरण का पर्याप्त संकेतक नहीं है। महिला की वास्तविक आर्थिक स्वतंत्रता इस बात से भी निर्धारित होती है कि उसे अपनी आय के उपयोग पर कितना नियंत्रण प्राप्त है, क्या उसके पास अपना बैंक खाता है, क्या वह बचत एवं निवेश संबंधी निर्णय ले सकती है और क्या संपत्ति पर उसका अधिकार है। यदि महिला आय अर्जित करती है, लेकिन उसकी आय के उपयोग का निर्णय परिवार के अन्य सदस्य लेते हैं, तो उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता सीमित मानी जाएगी।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि महिलाओं की निर्णय लेने की भूमिका सभी क्षेत्रों में समान नहीं होती। बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और दैनिक घरेलू खर्च जैसे मामलों में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है, जबकि संपत्ति की खरीद-बिक्री, बड़े निवेश, ऋण और परिवार के महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों में उनकी स्वतंत्र भूमिका अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के बावजूद आर्थिक शक्ति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में लैंगिक असमानता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

शिक्षा महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण आधार दिखाई देती है। उच्च शिक्षित महिलाओं के लिए रोजगार, व्यवसाय, वित्तीय सेवाओं और डिजिटल माध्यमों तक पहुंच के अवसर अधिक होते हैं। शिक्षा महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है। हालांकि केवल शिक्षा पर्याप्त नहीं है रोजगार के अवसर, परिवार का सहयोग, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच और सामाजिक वातावरण भी महिला की वास्तविक आर्थिक स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं।

इसी प्रकार बैंकिंग एवं डिजिटल वित्तीय सेवाओं तक पहुंच महिलाओं की आर्थिक स्वायत्तता का महत्वपूर्ण आयाम है। अपना बैंक खाता, स्वयं बचत करने की क्षमता और डिजिटल भुगतान जैसे साधन महिलाओं को आर्थिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण प्रदान कर सकते हैं। इससे वे परिवार की आर्थिक गतिविधियों में अधिक प्रभावी ढंग से भाग ले सकती हैं और उनकी निर्णय लेने की क्षमता मजबूत हो सकती है।

अंततः प्रस्तुत अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि महिला की आर्थिक स्वतंत्रता और परिवार में उसकी निर्णय लेने की क्षमता परस्पर संबंधित प्रक्रियाएं हैं। आर्थिक रूप से सक्षम महिला न केवल अपने जीवन की परिस्थितियों को बेहतर ढंग से प्रभावित कर सकती है, बल्कि परिवार के आर्थिक एवं सामाजिक निर्णयों में भी अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकती है। इसलिए महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता को व्यक्तिगत आय के प्रश्न के बजाय समानता, अधिकार, पारिवारिक शक्ति-संतुलन और सामाजिक परिवर्तन के व्यापक संदर्भ में समझना अधिक उचित होगा।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा परिवार में उनकी निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

• महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता

महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विशेष रूप से उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल आधारित शिक्षा के अवसर

महिलाओं तक पहुंचाए जाने चाहिए, ताकि वे रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त कर सकें।

- **रोजगार के अवसरों का विस्तार**

महिलाओं के लिए स्थानीय स्तर पर सुरक्षित एवं सम्मानजनक रोजगार के अवसर बढ़ाए जाने चाहिए। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में महिला-केंद्रित रोजगार, लघु उद्योग, सेवा क्षेत्र और घर-आधारित रोजगार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- **समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक**

महिलाओं को समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। वेतन में लैंगिक असमानता आर्थिक आत्मनिर्भरता को कमजोर करती है, इसलिए रोजगार क्षेत्र में समानता को प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए।

- **महिलाओं की आय पर उनका नियंत्रण सुनिश्चित किया जाए**

केवल महिला का आय अर्जित करना पर्याप्त नहीं है। उसे अपनी आय के उपयोग, बचत और निवेश से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार भी मिलना चाहिए। परिवार में महिलाओं की आय को उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्वायत्तता का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाना चाहिए।

- **वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा**

महिलाओं को बैंकिंग, बचत, बीमा, ऋण, निवेश, डिजिटल भुगतान और सरकारी वित्तीय योजनाओं के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इससे वे आर्थिक संसाधनों का स्वतंत्र एवं प्रभावी उपयोग कर सकेंगी।

- **महिलाओं के बैंक खाते और डिजिटल वित्तीय पहुंच को मजबूत करना**

प्रत्येक महिला के पास व्यक्तिगत बैंक खाता हो तथा वह स्वयं उसका संचालन कर सके, इसके लिए जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। डिजिटल बैंकिंग और ऑनलाइन वित्तीय सेवाओं के सुरक्षित उपयोग की जानकारी भी दी जानी चाहिए।

- **संपत्ति एवं उत्तराधिकार अधिकारों के प्रति जागरूकता**

महिलाओं को संपत्ति एवं उत्तराधिकार से संबंधित अपने कानूनी अधिकारों की जानकारी दी जानी चाहिए। संपत्ति पर वास्तविक अधिकार महिलाओं की दीर्घकालीन आर्थिक सुरक्षा और पारिवारिक निर्णय क्षमता को मजबूत कर सकता है।

- **स्वयं सहायता समूहों को अधिक प्रभावी बनाया जाए**

स्वयं सहायता समूहों को केवल बचत और ऋण तक सीमित न रखते हुए उन्हें कौशल विकास, विपणन, डिजिटल वित्त, उद्यमिता और उत्पादों की बिक्री से जोड़ा जाना चाहिए। इससे महिलाओं की नियमित आय और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

- **महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन**

महिलाओं को छोटे व्यवसाय और उद्यम शुरू करने के लिए आसान ऋण, प्रशिक्षण, बाजार की उपलब्धता और तकनीकी सहायता प्रदान की जानी चाहिए। विशेष रूप से जयपुर जैसे क्षेत्र में हस्तशिल्प, पर्यटन, खाद्य प्रसंस्करण, ऑनलाइन व्यवसाय और सेवा क्षेत्र में महिला उद्यमिता की संभावनाओं को बढ़ाया जा सकता है।

- **परिवार में निर्णय लेने की समान भागीदारी**

परिवार में बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू खर्च, बचत, निवेश, संपत्ति और अन्य महत्वपूर्ण मामलों में महिलाओं की राय को समान महत्व दिया जाना चाहिए। महिला की आर्थिक भूमिका के साथ उसकी निर्णयकारी भूमिका को भी स्वीकार किया जाना आवश्यक है।

- **घरेलू कार्यों का समान विभाजन**

महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के लिए घरेलू एवं देखभाल संबंधी कार्यों का बोझ केवल महिलाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए। परिवार के पुरुष सदस्यों को भी घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल में समान भागीदारी करनी चाहिए।

- **कौशल विकास और पुनःकौशल प्रशिक्षण**

महिलाओं के लिए सिलाई, हस्तशिल्प, डिजिटल मार्केटिंग, कंप्यूटर, वित्तीय प्रबंधन, ई-कॉमर्स और अन्य रोजगारपरक कौशलों का प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे महिलाओं को बदलती अर्थव्यवस्था के अनुरूप रोजगार प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

- **ग्रामीण महिलाओं पर विशेष ध्यान**

ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार, बैंकिंग, डिजिटल सेवाओं और बाजार तक पहुंच की विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए। स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण एवं रोजगार केंद्र स्थापित करने से महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाई जा सकती है।

- **महिला आर्थिक सशक्तिकरण के साथ सामाजिक जागरूकता**

महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता को केवल सरकारी योजनाओं का विषय न मानकर सामाजिक परिवर्तन के रूप में देखा जाना चाहिए। परिवार एवं समुदाय में यह जागरूकता विकसित करना आवश्यक है कि महिला की आर्थिक स्वतंत्रता पूरे परिवार के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में योगदान करती है।

- **नीति-निर्माण में निर्णय क्षमता को भी सूचक बनाया जाए**

महिला सशक्तिकरण की योजनाओं के मूल्यांकन में केवल रोजगार या आय को सफलता का आधार न बनाया जाए। महिलाओं की आय पर नियंत्रण, संपत्ति का स्वामित्व, वित्तीय निर्णयों में भागीदारी और परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में भूमिका को भी प्रमुख संकेतकों के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ministry of Statistics and Programme Implementation (MoSPI). (2026). Annual Report, Periodic Labour Force Survey (PLFS), 2025. Government of India, New Delhi.
2. Ministry of Statistics and Programme Implementation (MoSPI). (2025). Time Use in India, 2024. National Statistical Office, Government of India, New Delhi.
3. Ministry of Statistics and Programme Implementation (MoSPI). (2025). Fact Sheet on Time Use Survey, 2024. National Statistical Office, Government of India, New Delhi.
4. Ministry of Statistics and Programme Implementation (MoSPI). (2025). Women and Men in India 2024: Selected Indicators and Data. Government of India, New Delhi.
5. Desai, Neera & Krishnaraj, Maithreyi. (1990). Women and Society in India. Ajanta Publications, New Delhi.
6. Dube, Leela. (1997). Women and Kinship: Comparative Perspectives on Gender in South and South-East Asia. United Nations University Press.
7. Sharma, A. M. (2016). Industrial Sociology and Labour Welfare. Himalaya Publishing House, Mumbai.
8. Giddens, Anthony. (2009). Sociology. Polity Press, Cambridge.
9. Haralambos, M. & Holborn, M. (2013). Sociology: Themes and Perspectives. Collins, London.
10. Mishra, Ankita; Risse, Leonora & Sinclair, Sarah. (2026). Financial Inclusion and Women’s Personal Autonomy in India. Social Indicators Research.
11. Patwardhan, V. (2025). Work-related Decision-making and Economic Well-being among Married Women in India. The Economic and Labour Relations Review.
12. Mitra, Nandini & Dey, Kushal. (2024). A Study on Financial Independence and Financial Decision-Making Autonomy of Women. Asian Journal of Multidisciplinary Research.
13. Gupta, Riya & Bhadoria, Shailendra Singh. (2023). Women’s Financial Autonomy in Household Financial Decisions: A Study on Rural Women.

